सरस्वती पूजन

स्थापना (दोहा)

जनम-जरा-मृतु छय करै, हरै कुनय जड़रीति।
भवसागरसों ले तिरै, पूजैं जिन वच प्रीति॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्।

(त्रिभंगी)

छीरोदधिगंगा, विमल तरंगा, सलिल अभंगा सुखसंगा।
भरि कंचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी हितचंगा॥
तीर्थंकर की धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनिज्ञानमई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

करपूर मंगाया, चंदन आया, केशर लाया रंग भरी।
शारदपद वंदों, मन अभिनंदों पाप निकंदों दाह हरी॥ तीर्थंकर॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

सुखदास कमोदं, धारकमोदं, अति अनुमोदं चंदसमं।
बहुभक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई मात ममं॥ तीर्थंकर.॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।

बहुफूल सुवासं, विमल प्रकाशं, आनन्दरासं, लाय धरे।
मम काम मिटायो, शील बढ़ायो, सुख उपजायो दोष हरे॥ तीर्थंकर.॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.स्वाहा।

पकवान बनाया, बहुघृत लाया, सब विधि भाया मिष्ट महा।
पूजूँ थुति गाऊँ प्रीति बढ़ाऊँ क्षुधा नशाऊं हर्ष लहा॥ तीर्थंकर.॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

करि दीपक ज्योतं, तमछय होतं, ज्योति उदोतं तुमहिं चढ़ै।
तुम हो परकाशक, भरमविनाशक, हम घट भासक ज्ञान बढ़ै॥
तीर्थंकर की धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

शुभगंध दशोंकर, पावक में धर, धूप मनोहर खेवत हैं।
सब पाप जलावैं, पुण्य कमावैं, दास कहावैं सेवत हैं॥ तीर्थंकर.॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम छुहारी, लोंग सुपारी, श्रीफल भारी, ल्यावत हैं।
मनवांछित दाता, मेट असाता तुम गुन माता गावत हैं॥ तीर्थंकर.॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नयनन सुखकारी, मृदुगुणधारी, उज्ज्वल भारी, मोल धरैं।
शुभगंध सम्हारा, वसन निहारा, तुम तन धारा ज्ञान करैं॥ तीर्थंकर॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै दिव्यज्ञानप्राप्तये वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अच्छत, फूल चरु चत, दीप धूप फल अति लावैं।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावैं॥तीर्थंकर.॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(सोरठा)

ओंकार धुनिसार, द्वादशांगवाणी विमल।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जड़ता हरै॥

(चौपाई)

पहलो आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो।
दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरु भाषं॥

तीजो ठाना अंग सु जानं, सहस बियालिस पद सरधानं।
चौथो समवायांग निहारं, चौसठ सहस लाख इक धारं॥

पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति दरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठो ज्ञातृकथा विस्तारं, पाँच लाख छप्पन हज्जारं॥

सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यार 'लख भंगं।
अष्टम अन्तकृत दश ईसं, सहस अट्ठाइस लाख तेईसं॥

नवम अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरानवै सोल हजारं॥

ग्यारम सूत्रविपाक सु भाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं।
चार कोड़ि अरु पन्द्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरु भाखं॥

द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं, इकसौ आठ कोड़िपनवेदं।
अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्या हन हैं॥

इकसौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्व पद माने॥

कोड़ि इकावन आठ हि लाखं, सहस चुरासी छह सौ भाखं।
साढ़े इक्कीस श्लोक बताये, एक-एक पद के ये गाये॥

(दोहा)

जा वानी के ज्ञान तै, सूझै लोक-अलोक।
'द्यानत' जग जयवन्त हो, सदा देत हों धोक॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री रक्षा बन्धन पर्व पूजन

(श्री अकम्पनाचार्य आदि सात सौ मुनिवर पूजन)

(छन्द-तांटक)

जय अकम्पनाचार्य आदि सात सौ साधु मुनिव्रत धारी।
बलि ने कर नरमेघ यज्ञ उपसर्ग किया भीषण भारी॥
जय जय विष्णुकुमार महामुनि ऋद्धि विक्रिया के धारी।
किया शीघ्र उपसर्ग निवारण वात्सल्य करुणा धारी॥

रक्षा-बन्धन पर्व मना मुनियों का जय जयकार हुआ।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन घर घर मंगलाचार हुआ।
श्री मुनि चरण कमल में वन्दूँ पाऊँ प्रभु सम्यकदर्शन।
भक्ति भाव से पूजन करके निज स्वरूप में रहूँ मगन॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि सप्तशतकमुनि अत्र अवतर अवतर संवौषट्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

जन्म मरण के नाश हेतु प्रासुक जल करता हूँ अर्पण।
रागद्वेष परिणति अभावकर निज परिणति में करूँ रमण॥
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि सप्तशतक को करूँ नमन।
मुनि उपसर्ग निवारक विष्णुकुमार महा मुनि को वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार एवं अकम्पनाचार्यादि सप्तशतकमुनिभ्यो जलं.....

भव सन्ताप मिटाने को मैं चन्दन करता हूँ अर्पण।
देह भोग भवसे विरक्त हो निज परिणति में करूँ रमण॥ श्री.॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार एवं अकम्पनाचार्यादि सप्तशतकमुनिभ्यो चन्दनं.....

अक्षयपद अखंड पाने को अक्षत धवल करूँ अर्पण।
हिंसादिक पापों को क्षय कर निज परिणति में करूँ रमण॥ श्री.॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार एवं अकम्पनाचार्यादि सप्तशतकमुनिभ्यो अक्षतं.....

कामबाण विध्वंस हेतु मैं सहज पुष्प करता अर्पण।
क्रोधादिक चारों कषाय हर निज परिणति में करूँ रमण॥